Since : 2002

Health Today Publication Hisar

CALL US : 01662-283072

98120-58674

Health Today Publication

Leader in Health Books

Hindi

Visit Website: Click Here

होम्योपैथी प्रैक्टिस BOOK

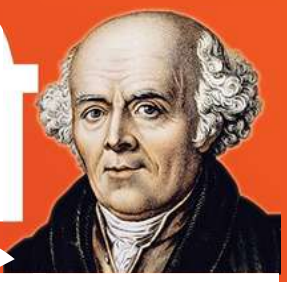

डॉ. राजपाल लांबा
BHMS, MD (Hom)

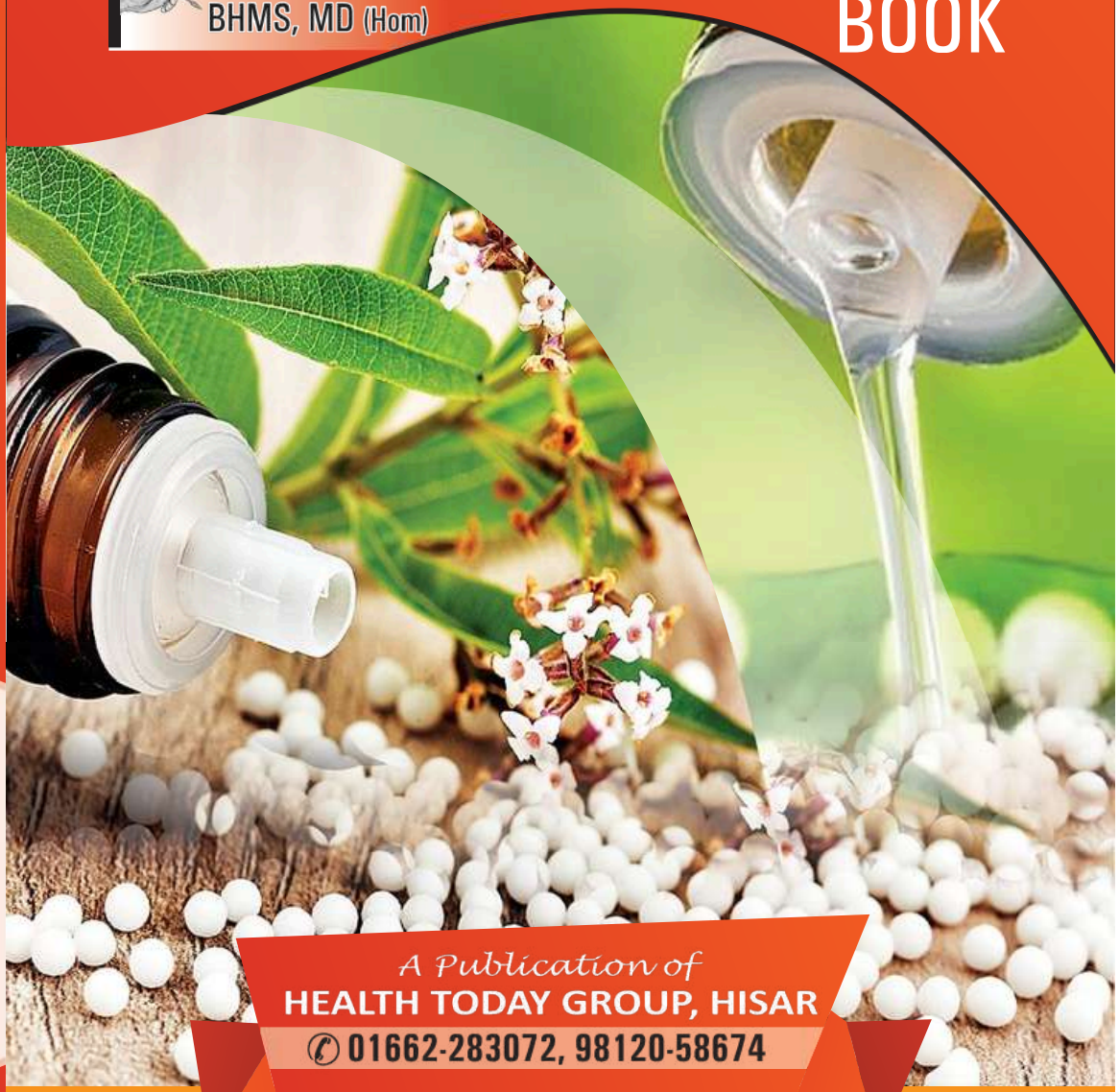

A Publication of
HEALTH TODAY GROUP, HISAR
✆ 01662-283072, 98120-58674

होम्योपैथी प्रैक्टिस BOOK

A Publication of
HEALTH TODAY GROUP, HISAR

होम्योपैथी प्रैक्टिस BOOK

ISBN No. : 978-81-928916-5-1

केवल पंजीकृत होम्योपैथी चिकित्सकों लेबोरेट्री व चिकित्सालयों हेतु

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन (कॉपीराइट)

प्रथम अंक : 2016

यह पुस्तक पंजीकृत चिकित्सकों की सामान्य जानकारी हेतु प्रकाशित की जा रही है। केवल इस पुस्तक के आधार पर उपचार अथवा परीक्षण करवाने की अपेक्षा योग्य पंजीकृत चिकित्सक से सलाह लें। हालांकि इस पुस्तक को तैयार करने में पूर्ण सावधानी बरती गई है, किन्तु विधि विधान, प्रयोग एवं दुष्प्रभाव की जानकारी हेतु अधिकृत स्त्रोत से सूचना जुटाई जानी चाहिए, क्योंकि तकनीक में समय-समय पर फेरबदल संभव है। मात्र इस पुस्तक से मिले ज्ञान के आधार पर चिकित्सा नहीं की जानी चाहिए एवं इस आधार पर होने वाली किसी भी हानि-लाभ के लिए स्वयं प्रयोगकर्ता ही जिम्मेवार होगा। उपचार व परीक्षण सदैव योग्य चिकित्सक की सलाह व देखरेख में ही करवाया जाना चाहिए।

समय-समय पर होने वाले चिकित्सकीय फेरबदल, दवाओं की मात्रा, दुष्प्रभाव व दवाओं पर प्रतिबंध के मामले में तत्कालीन नियम कानून ही मान्य होंगे। जो सभी के लिए बाध्यकारी होंगे।

-प्रकाशक

इस पुस्तक को प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें

हैल्थ-टुडे समाचार पत्र कार्यालय

10, बिन्दल धर्मशाला मार्केट, बाजार वकीलान

हिसार (हरियाणा)-125001

फोन : 01662-283072, 09812058674, 09254358674

e-mail : healthtodayindia@gmail.com

पुस्तक का मूल्य :-

सामान्य ग्राहकों हेतु 800/- रुपये

हैल्थ-टुडे के पाठकों हेतु : 600/-रुपये

(डाक खर्च 50/- अतिरिक्त)

मुद्रक :-

राधे कृष्णा आफसेट प्रेस

हिसार

लेखक की कलम से...

होम्योपैथी की खोज एक जर्मन चिकित्सक डा. क्रिश्चन फ्रेडरिक सैमुअल हैनीमैन (1755-1843) ने 18वीं सदी के अंत में की। यह चिकित्सा पद्धति 'समः समम शमयति' एवं 'विष विषस्य औषधम् के सिद्धांत पर आधारित है। होम्योपैथी एक ऐसी चिकित्सा पद्धति है जिसमें रोगोपचार हेतु ऐसी औषधियों का प्रयोग किया जाता है तो स्वस्थ व्यक्ति में उस रोग विशेष के लक्षण उत्पन्न कर सके। होम्योपैथी केवल समग्र रूप से मरीजों का उपचार ही नहीं करती बल्कि इसमें व्यक्ति की व्यक्तिगत विशेषताओं पर भी ध्यान दिया जाता है। 'समानता के सिद्धांत' की इस अवधारणा को भी हिप्पोक्रेटस और पेरासेलसस द्वारा स्थापित किया गया, लेकिन डा. हैनीमन ने आधुनिक प्रयोगशाला तकनीकों की जानकारी के अभाव के युग में रहत हुए भी इसको वैज्ञानिक आधार प्रदान किया। होम्योपैथी औषधियां पशुओं, पौधों, खनिजों और अन्य प्राकृतिक पदार्थों के चिन्हों से डाइनामाईजेशन या पौटेन्टाइजेशन नामक मानक पद्धति से तैयार की जाती है जिसमें इनके अवश्रिमण सम्मिलित है तो औषधियों में अंतर्निहित उपचारात्मक शक्ति बढ़ाते हैं। इस प्रकार 'पोटेन्टाइजेशन' से तैयार की गई औषधियों की रोग से मुकाबला करने की क्षमता अत्याधिक बढ़ जाती है और इनमें विषाक्तता नहीं पाई जाती है। इन औषधियों के उपचारात्मक प्रभाव के मूल्यांकन हेतु स्वस्थ मनुष्यों पर इनको परखा जाता है। यह पद्धति शरीर में एक नियामक शक्ति (जीवंत शक्ति) की उपस्थिति मानती है यह स्वास्थता, बीमारी एवं उपचार में अपनी जीवन्त भूमिका निभाती है। बीमारी के प्रति शरीर की प्राकृतिक प्रतिक्रिया रोग लक्षणों के रूप में प्रकट होती है जिससे कि बीमारी के उपचार हेतु औषधि निर्धारण में सहायता मिलती है। औषधियों से शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली सक्रिय की जाती है जिससे रोगी प्राकृतिक रूप से स्वयं ठीक हो जाता है। यह पद्धति रोगी

के प्रति एक व्यक्तिपरक एवं समग्र उपगम अपनाती है। एक होम्योपैथी चिकित्सक बीमारी का ही उपचार नहीं करता बल्कि किसी बीमारी से पीड़ित रोगी ही उसका उपचार बिन्दु होता है। चिकित्सक द्वारा रोगी के शारीरिक एवं मानसिक स्तर पर सभी उपविन्यासों की जांच की जाती है, लक्षणों की समग्रता के आधार पर रोगी की अवधारणा परिकल्पित की जाती है और रोगी के लक्षणों के सर्वाधिक निकटस्थ आधार पर औषधि का चुनाव किया जाता है। इस संबंध में उक्ति है 'होम्योपैथी रोगी का उपचार करती है, रोग का नहीं'। होम्योपैथी औषधियां किफायती, सेवन योग्य, दुष्प्रभाव रहित होती है और आसानी से इनका सेवन किया जा सकता है। कुछ मामलों में दुर्लभ एवं महंगी मशीनी जांच के बिना रोगी के लक्षणों के आधार पर भी औषधि का निर्धारण किया जा सकता है। मनोनितक विकार, ऑटो इम्यून बीमारियों, जरा एवं बाल रोगों, गर्भावस्था के दौरान रोगों, त्वचा रोगों, जीवन शैली संबंधी विकारों और एलर्जी के उपचार में होम्योपैथी अत्यन्त उपयोगी है। लाईलॉज चिरकालिक बीमरियों जैसे कैंसर, एच.आई.वी./एड्स, दीर्धकाल से बीमार रोगी और असाध्य रोगों जैसे रूमेटाइड गठिया में जीवन की गुणवत्ता को बढ़ाने में होम्योपैथी औषधियों ने सकारात्मक भूमिका दर्शायी है। इन कारणों से संपूर्ण विश्व में होम्योपैथी की लोकप्रियता दिन-प्रतिदिन बढ़ रही है। भारत में होम्योपैथी की शुरूआत कुछ जर्मन प्रचारकों और चिकित्सकों द्वारा स्थानीय लोगों में होम्योपैथी औषधियां वितरित करने के साथ हुई। यद्यपि 1839 में डा. जोन मार्टिन होनीबर्गर द्वारा महाराजा रणजीत सिंह के स्वर रज्जु पक्षाघात का सफलतापूर्वक उपचार करने से भारत में होम्योपैथी का आरंभ माना जाता है। डा. होनीबर्गर कोलकाता (तत्कालीन कलकत्ता) में बस गये और हैजा चिकित्सक के रूप में विख्यात हुए।

चिकित्सक के रूप में मैंने अपने पास आने वाले रोगियों का मार्गदर्शन और उपचार अपना दायित्व समझकर किया है। आम लोगों की परेशानियों को देखते हुए और उन्हें रोगों से छुटकारा दिलाने के लिए मैंने इस पुस्तक को सरल और और सुगम भाषा में लिखने का प्रयास किया है। यह पुस्तक होम्योपैथी संबंधी मेरे गहन अध्ययन और अनुभवों का परिणाम है। इसका एकमात्र उद्देश्य रोगियों का आसान और सस्ता उपचार करना है। यह पुस्तक होम्योपैथी चिकित्सक के लिए भी संदर्भ पुस्तक के रूप में उपयोगी रहेगी। पुस्तक को अधिकाधिक उपयोगी बनाने के लिए मैंने अनेक होम्योपैथी ग्रंथों का लाभ उठाया है। चूंकि आम आदमी रोगों को

उनकी प्रकृति से ही समझता है, इसलिए पुस्तक में रोगों के नाम भी दिए गए हैं। प्रस्तुत उपचार पूरी तरह से रोगों की विशेषताओं और विचित्र लक्षणों पर आधारित हैं,जिनमें होम्योपैथी के सिद्धांतों का ध्यान रखा गया है। दवाओं की उपयुक्त पोटेंसी का भी सुझाव दिया गया है। कुछ मामलों में उस विशेष रोग के लिए उपचार के तरीके दिए गए हैं लेकिन अन्य मामलों में संबंधित रोगी के इतिवृत्त, जैसे-आयु, प्रकृति, सहनशक्ति, आदतों और वातावरण के आधार पर उपचार या दवाओं की पोटेंसी को परिवर्तित किया जा सकता है। जन-सामान्य में आम धारणा यह है कि होम्योपैथी दवाओं को किसी प्रकार की प्रतिक्रिया (रिएक्शन) के डर के बिना लिया जा सकता है। अपने अनुभवों के आधार पर मुझे यह उचित प्रतीत नहीं होती है। अत: मेरा सुझाव है कि होम्योपैथी दवा के इस्तेमाल को तभी दुहराएं, जब रोग के लक्षण बने रहें। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि इस पुस्तक को पढ़ने वाले हर व्यक्ति को अच्छा स्वास्थ्य प्राप्त हो व अन्य को भी उत्तम स्वास्थ्य प्रदान कर सके।

- डा० राजपाल लांबा
BHMS, MD (Hom)
डा. सर्वपल्ली राधा कृष्ण आयुर्वेद विश्वविद्यालय, जोधपुर (राजस्थान)
भारत होम्योपैथिक क्लीनिक, नजदीक गुरूनानक स्कूल,
ऋषि नगर, हिसार (हरियाणा) मो० : 94163-45779

होमियोपैथी को लेकर भ्रान्तियां और तथ्य

आजकल कि भागदौड़ भरी जीवनशैली में समय का अभाव है कि वो थोड़ा रुक कर अपने शरीर को स्वस्थ बनाए रखने के लिए लिए या इस देह कि चिकित्सा करवाने के लिये समय निकाल सके, हर कोई कम से कम समय में स्वस्थ हो कर फिर से काम पर लग जाना चाहता है, जनसाधारण कि इसी सोच के चलते आधुनिक चिकित्सा पद्धति एलोपैथी का विकास हुआ...। किन्तु त्वरित उपचार के चक्कर में एलोपैथिक चिकित्सा से होने वाले दुष्प्रभावों के विषय में आज जनसामान्य जागरूक होने लगा है, इसीलिए होम्योपैथिक चिकित्सा पद्धति दिन दुनी रात चौगुनी तरक्की कर रही है और लोगों में इसकी लोकप्रियता बढ़ती ही जा रही है...। आज दुनिया में ऐसे कई लोग है जो अपनी किसी भी शारीरिक समस्या के लिए सबसे पहले होम्योपैथी को ही प्राथमिकता देतें है, जबकि कुछ ऐसे भी है जो कभी-कभी ही होम्योपैथीक औषधि लेते हैं और कुछ तो ऐसे है जो अन्य दवाओं से परेशान होकर फिर होम्योपैथी कि ओर झुकते, जबकि कुछ लोग तो होम्योपैथी के विषय में वास्तविकता से दूर, सुनी सुनाई बातों से मन में कई प्रकार कि भ्रान्तियां पालकर बैठ जाते है...। **इस लेख के माध्यम से यहां हम होम्योपैथी को लेकर ऐसी ही कुछ भ्रांतियों को दूर करने का प्रयास कर रहे है.....।**

1. होम्योपैथी एक अप्रमाणित विज्ञान है....।

तथ्य : होम्योपैथी, प्रायोगिक भेषज विज्ञान और परिक्षीत चिकित्सकीय सूत्रों पर आधारित विज्ञान है, कई वर्षों के प्रायोगिक अनुभवों के बाद होम्योपैथीक औषधियों कि क्रियाशीलता विभिन्न रोग लक्षणों पर सिद्ध हो चुकी है।

2. होम्योपैथिक मीठी गोलियां सिर्फ औषधि रहित शक्कर कि गोलियां मात्र होती है, जो किसी काम कि नहीं होती।

तथ्य : यह बात सही है कि शक्कर कि सफेद मीठी गोलियों में कोई भी औषधीय गुण नहीं होते ये सिर्फ औषधियों को वहन करने का साधन या माध्यम मात्र है,

औषधियां तो एल्कोहल आधारित होती है जो सीधे जुबान पर, पानी में घोल कर या फिर मीठी गोलियों के माध्यम से रोगी को दी जा सकती है। होम्योपैथिक औषधियों का परिक्षण तो विश्वभर में हजारों रोगियों पर हो चुका है और करोड़ों लोग आज भी इससे लाभान्वित हो रहे है जिससे ये साबित होता है कि ये औषधियां महज शक्कर कि गोलियां नहीं अपितु महत्वपूर्ण औषधियां है।

3. होम्योपैथिक औषधियां धीरे-धीरे असर करने वाली दवाइयां है जो किसी उग्र रोग जैसे डायरिया, ज्वर, खांसी, या जुकाम आदि में अपना प्रभाव नहीं दिखाती।

तथ्य : जबकि होम्योपैथिक औषधियां तो ऐसे उग्र या तरुण रोगों में अन्य कि अपेक्षा और ज्यादा प्रभावकारी सिद्ध होती, बदकिस्मती से लोग एक होमियोपैथ के पास तभी पहुंचते हैं जब ऐसे सरल रोग भी जटिल बन जाते है, और ऐसे जटिल रोगियों को ही ठीक करने में होमियोपेथी को अधिक समय लगता है, साथ ही लोग आर्थराईटिस, एलर्जिक अस्थमा या त्वचा रोगों जैसी जटिल समस्याओं के लिए ही होमियोपैथी को चुनते हैं जिनका किसी भी चिकित्सा पद्धति से उपचार करने में समय तो लगता ही है।

4. होमियोपैथिक औषधियां चमत्कारिक औषधियां है जो किसी भी विकृति को ठीक करने में सक्षम होती है।

तथ्य : ये बात ठीक है कि होमियोपैथीक औषधियां 'चमत्कारिक औषधियों' कि भांति कार्य करती है, फिर भी अन्य चिकित्सा पद्धतियों की ही तरह इसकी भी कुछ सीमाएं है जैसे, कि दांत के रोगियों में, हड्डियों के टूटने में या पूर्ण रूप से पके मोतियाबिन्द जैसे रोगों में जहां सर्जरी के अलावा कोई विकल्प ही ना हो, वहां होमियोपैथी कारगर साबित नहीं होती।

5. होमियोपैथिक चिकित्सक अकुशल होतें है जिनको औषधियों का पूरा ज्ञान भी नहीं होता।

तथ्य : भारत भर 180 से ज्यादा होमियोपैथिक मेडिकल कॉलेज है जो इस विषय में स्नातक और स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम संचालित करते हैं, वर्तमान में हमारे देश में दो लाख से अधिक, पूर्ण रूप से डिग्रीधारी चिकित्सकगण प्रेक्टीस कर रहे है।

6. होमियोपैथिक चिकित्सा के दौरान रोगियों को खानपान संबंधी कड़े परहेजों का पालन करना होता है।

तथ्य : होमियोपैथिक चिकित्सा के दौरान कुछ औषधियों का पूरा-पूरा लाभ लेने के लिये कुछ रोगियों को कच्चे प्याज, लहसुन, हिंग,चाय-काफी, तम्बाकू, शराब आदि से बचने कि सलाह दी जाती है, जबकि शराब और तम्बाकू जैसे वस्तुएं यूं

भी स्वास्थ्य के लिए तो हानिकारक ही होती है ना।

7. होमियोपैथिक चिकित्सा मात्र जीर्ण या जटिल रोगों के लिए ही कारगर होती है।

तथ्य : अक्सर होता यही है, जब सारे चिकित्सकीय प्रयास विफल हो जाते है, जबकि वास्तविकता ये है कि लोग होमियोपैथिक चिकित्सा लेते ही तब है जब उनके सारे चिकित्सकीय प्रयास विफल हो जाते है। लंबे चले एलोपैथीक चिकित्सा प्रयोग के दौरान साधारण रोग भी जीर्ण या जटिल हो जाता है जिसकी चिकित्सा, अब होमियोपैथी के द्वारा भी जटिल हो जाती है।

8. होमियोपैथी कि मीठी गोलियां, 'डायबिटिक रोगियों' के लिये ठीक नहीं है।

तथ्य : जी हां, डायबिटिक रोगी भी होमियोपैथी कि छोटी-छोटी मीठी गोलियां ले सकते है, प्रतिदिन लिये जाने वाले भोजन से प्राप्त होने वाली शुगर, इन गोलियों से प्राप्त होने वाली शुगर से कहीं ज्यादा होती है। फिर भी किसी डायबिटीज कि बिगड़ी हुई अवस्था में अल्कोहल आधारित औषधियां सीधे जुबान पर, पानी में घोल कर या लेक्टोज के साथ ली जा सकती है।

9. एक होमियोपैथ हर प्रकार के रोग में एक ही तरह कि सफेद मीठी गोलियां देते है, आखिर ये फायदा कैसे करेगी।

तथ्य : 3000 से ज्यादा औषधियों में से रोग लक्षणानुसार चुनी गयी औषधि को देने के लिये होमियोपैथिक चिकित्सक एक ही प्रकार कि सफेद मीठी गोलियों का प्रयोग करते है जो कि औषधि विनिमय हेतु सिर्फ माध्यम मात्र होती है और करोड़ों रोगी इनसे लाभान्वित भी हो रहे है।

प्रस्तुत लेख का उद्देश्य, जनसामान्य में होमियोपैथिक चिकित्सा जैसी उत्तम पद्धति के प्रति जागरूकता लाना मात्र है, कोई भी व्यक्ति लेख में वर्णित किसी भी औषधि को किसी कुशल होमियोपैथिक चिकित्सक से परामर्श के बाद ही लें, अपने आप किसी भी औषधि का प्रयोग न स्वयं पर करें, न ही किसी अन्य रोगी पर करके अपने तथा उनके स्वास्थ्य के साथ खिलवाड़ करें। पाठकों से ऐसी हमारी करबद्ध प्रार्थना है। होमियोपैथी के साथ ही साथ अब तो आधुनिक चिकित्साविज्ञान भी ये मान चुका है की शरीर में कोई भी रोग, तब तक अपने लक्षण नहीं प्रकट कर पाता जब तक की शरीर का रोगप्रतिरक्षा तंत्र मजबूत है, भले ही फिर शरीर में रोग के कीटाणुओं से संबंधित सारे टेस्ट पोजिटिव आए। जैसे ही शरीर की रोग प्रतिकारक क्षमता घटी की शरीर पर रोग का आक्रमण हो जाता है।

विषय सूची

रोगों के नाम	पृष्ठ संख्या
मस्तिष्क और मानसिक रोग	
भय	14
भयानक सपने आना	17
धोखा देना, झूठ बोलना	19
मंद-बुद्धिता (जड़-बुद्धिता)	21
मानसिक-आघात होना	23
ईर्ष्या (जलन)	24
नींद न आना	25
दिमागी कमजोरी	29
आधासीसी-दर्द या नर्वस रोग	31
होम-सिक्नेस	33
नर्वसशिरोवेदना	34
सिरदर्द	36
उन्माद रोग	41
चक्कर आना	43
नींद-सी आते रहना	47
चिड़चिड़ापन	49
स्नायु-शूल	51
पक्षाघात या लकवा	60
खींचन, ऐंठन, कंपन, आक्षेप	62
मिर्गी	65
कुछ मानसिक रोग और औषधियों से उपचार	68
बालों के रोग	
बालों का झड़ना	75
बालों का सफेद हो जाना	77
जूं	78
बालों में रूसी	80
आंखों के रोग	
पलकों का लटकना	83
निकट-दृष्टि दोष	84
पलकों में खुजली होना	85
तेज रोशनी सहन न होना	91
पलकों के किनारों की सूजन	93
अंजनहारी	96
भैंगा होना (तिरछा दिखाई देना)	97
पलकों की सूजन	99
पलक की भीतरी श्लैष्मिक-झिल्ली में सूजन	100
आंखों की पलकों को अन्दर/बाहर की ओर मुड़ना	102
रतौंधी	103
कान के रोग	
बहरापन	106
सुनने की शक्ति नष्ट होना	108
कान का बहना	110
कान में मैल	113
कान में दर्द	114
मुंह, दांत और गले का रोग	
मसूढ़ों के रोग	117
मसूढ़ों से पस निकलना	119
मुंह के रोग	121
स्वरयंत्र की सूजन	125
दांतों का दर्द	128
दांतों के रोग	130
स्वरभंग या गला बैठना	133
गले का दर्द	137
गला रुंधना	141
गलकोष (तालु) की सूजन	143
घेंघा (गिल्लड़)	145
हकलाना, तुतलाना	147
होंठों के रोग	149
जीभ के रोग	151
नासा और कंठतंतुओं का बढ़ना	160
टांसिल (तालुमूल) की सूजन	164
मुंहासे	167
छाती और फेफड़ों के रोग	
सांस फूलना	171
दमा	173
इन्फ्लुएंजा	175
न्यूमोनिया (फेफड़े का प्रदाह)	178
कुकर खांसी (हूपिंग कफ)	181
खांसी	183
साइनस	188
हे-फीवर तथा दमा	191
जुकाम	193
हृदय रोग	
निम्न रक्तचाप	203
धमनी की बीमारी	204

विषय सूची

रोगों के नाम	पृष्ठ संख्या
दिल की धड़कन	206
वात के कारण हृदय रोग	208
शिराओं की बीमारी	212
हृदय रोग	216
उच्च रक्तचाप	219
हृदय शूल (दिल का दर्द)	223
पेट के रोग	
भूख न लगना	227
डकार आना	229
दस्त आना (अतिसार)	233
हैजा	238
जलोदर (पेट में पानी भरना)	244
जिगर का बढ़ना	246
जिगर का कैंसर	248
जिगर के पीले दाग	249
पेट में कीड़ें होना	250
खाद्य-विषाक्ता	253
उल्टी करने की इच्छा	255
अफारा	257
अम्लरोग	259
जिगर की सूजन	263
पेचिश	267
तिल्ली के कष्ट	271
हिचकी	274
पीलिया	276
कब्ज	280
आंत उतरना	283
पित्त पथरी	285
खून की उल्टी होना	287
आंत उतरना	290
ऐपेण्डिसाइटिस	294
छोटी आंत की जलन	297
गुदा व आंतों के रोग	
गुदा-भ्रंश (कांच निकलना)	300
गुदा का फटना	302
गुदा में दर्द	304
गुदाद्वार से खून बहना	306
भगंदर	307
गुदा रोग	309
बवासीर	311
कोलन से आंव आना	315
गुर्दे और मूत्र संबंधी रोग	
गुर्दे के ऊपर का रोग	318
मूत्रमार्ग की जलन	319
मूत्र-पथरी	320
मूत्र सम्बंधित परेशानी	322
बहुमूत्र	330
मूत्र न आना	334
मूत्रकृच्छ	336
गुर्दे का रोग	339
मूत्र-नली का संकोचन (छोटा) होना	344
मूत्राशय का पक्षाघात (लकवा)	346
पेशाब में ऐलब्यूमिना आना	347
अपने आप पेशाब निकल जाना	350
पेशाब में खून आना	353
मूत्राशय मुखशायी-ग्रन्थि	356
पेशाब का न बनना या बंद होना	359
पुरुष रोग	
स्वप्नदोष या वीर्यपात	362
संभोगक्रिया से सम्बंधित रोग	367
लिंग का रोग	370
उपदंश (सिफिलिस)	374
अंडकोष में पानी जमा होना	378
नपुंसकता	381
सूजाक (प्रमेह)	384
स्त्रीरोग	
हिस्टीरिया	391
जरायु का अर्बुद	395
जरायु का कैंसर	396
गर्भाशय की सूजन	397
जरायु से रजरूस्राव	399
मां के स्तनों में दूध	401
पैरों में दर्द तथा पेट में ऐंठन	404
प्रजनन से पहले की अवस्था	406

विषय सूची

रोगों के नाम	पृष्ठ संख्या
स्तनों में दर्द	408
स्तनों में फोड़ा हो जाना	410
बार-बार गर्भपात होना	411
रजोनिवृति (मासिकधर्म बंद होना)	413
बांझपन	415
डिम्बकोष में दर्द	417
मासिकस्राव रुक जाना	419
प्रदर	420
प्रसव के बाद बालों का झड़ना	423
गर्भावस्था के दौरान होने वाले रोग	425
मासिकधर्म से संबंधित रोग	438
अतिरज (मासिकधर्म में स्राव का ज्यादा आना)	442
मासिकधर्म का दर्द (ऋतु-शूल)	445
जरायु का अपने स्थान से हटना	447
स्त्री के यौन-सम्बंधी रोग	449
हाथ, पैर और हड्डियों के रोग	
पेशियों का कमजोर होना	454
टांगों में दर्द	455
पैरों से पसीना आना	456
घुटने के जोड़ के रोग	457
कूल्हे की हड्डी का क्षय रोग	460
नाखूनों के रोग	462
हड्डी का टूटना	465
हड्डी की वृद्धि	466
हाथों के रोग	467
फील-पांव	470
मांस-पेशियों में दर्द	472
पेशीवात	474
गठिया	476
जोड़ों का कष्ट	479
दर्द की प्रकृति	482
पैरों का कष्ट	486
वात रोग (सन्धि वात)	487
टैटनस	493
गर्दन का अकड़ जाना	496
कमर का दर्द (कटि-वात)	498
कशेरुका का अपने स्थान से हट जाना	505

रोगों के नाम	पृष्ठ संख्या
साइटिका (गृध्रसी) कूल्हों का दर्द	506
ऐंठन	508
चर्म रोग	
खराब त्वचा	510
जख्म के अंकुर	518
फोड़ा	519
दाद	522
खुजली	524
कुष्ठ रोग	531
मांस का सड़ना	534
मस्से	536
मवाद पैदा होना	538
मोच	539
विचर्चिका	540
त्वचा के छाले	542
त्वचा की फुन्सियां	544
कार्बंकल, अदीठ फोड़ा या पृष्ठ व्रण	548
शय्या-क्षत	550
बिवाई (सर्दी से त्वचा का फटना)	552
चोट या जख्म	553
उस्तरे से कटे बालों की जड़ों में खुजली	555
त्वचा के हल्के-भूरे निशान	556
एक्जिमा (पामा, अकौता, छाजन)	557
जख्म, घाव	559
जल जाना या झुलस जाना	563
सूजन	564
त्वचा का सफेद होना	568
त्वचा के रोग	569
पित्ती उछलना (आमवात)	576
बुखार	
बुखार	580
खसरा	590
मलेरिया-ज्वर	593
टाइफायड ज्वर	601
चेचक	603
घाव से ज्वर आ जाना	605
डेंगू-का बुखार	606

विषय सूची

रोगों के नाम	पृष्ठ संख्या
पौन-पुनिक ज्वर	608
प्लेग	609
बच्चों के रोग	
बच्चों के कान के रोग और उसमें प्रयोग की जाने वाली औषधियां	613
बच्चों के सांस रोग	615
बच्चों का अतिसार	617
शारीरिक व मानसिक विकास ठीक न होना	619
बच्चों के दांत निकलने पर होने वाले रोग	621
बच्चों का मूत्र रोग	624
जन्म के तुरन्त बाद बच्चे का दस्त आदि	627
बच्चों का स्वभाव बदल जाना	628
बालास्थि विकृति	631
कुकुर खांसी	633
बच्चों की तेज खांसी	635
अन्य रोग	
शराब पीने की आदत	638
चौंक उठना	639
ऑपरेशन का आघात	640

रोगों के नाम	पृष्ठ संख्या
कैंसर	642
चाय के कारण होने वाले रोग	649
खर्राटे मारना	650
पसीना	651
शारीरिक शक्ति कम होने से थकावट पैदा हो जाना	653
तंबाकू खाने की आदत	655
कमजोरी	657
लू लगना	660
पसीना रुक जाना	662
प्रतिरोधक (रोगों को रोकने वाला)	663
रक्त विकार (खून की खराबी)	666
रोगी में प्रतिक्रिया का अभाव	668
सुन्नपन	670
खून की कमी	673
एलर्जी, अतिसंवेदनशीलता	682
अर्बुद	686
ग्रंथियां	688
विभिन्न प्रकार की सूजन (शोथ)	692
भोजन के प्रति रुचि तथा अरुचि	697

Call Us

01662-283072, 98120-58674

Click Here For ..

Visit Our Website